कहानी

परिणीति

दीपमाला गिडवानी

नव्या आज बहुत उत्साहित थी, उसके महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन होने वाला था .उसने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु अपना नाम लिखवाया, पर सबसे ज्यादा वह गीत और नृत्य प्रतियोगिता के लिए उत्साहित थी, उसने दोनों प्रतियोगिताओं की बहुत अच्छी तैयारी की थी.

आखिर वह समय भी आया जब वह नृत्य प्रतियोगिता के लिए तैयार होकर स्टेज पर आई. उसने बहुत ही सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया पर अंतिम ताल पर उसका पैर फिसला और उसी क्षण किसी ने उसे गिरने से बचा लिया. कौन था वह,जिसने उसे त्वरित गति से थाम लिया था? जब उसने युवक का चेहरा देखा, तो वह उसे देखती ही रह गई .उसके पैरों में मोच भी आ गई थी. उस युवक ने उसे सहारा देकर घर तक पहुँचाया.

नव्या उस युवक के चरित्र से काफी प्रभावित हुई. बार-बार उसका चेहरा उसे याद आने लगा. कुछ महीनों बाद जब नव्या के विवाह की बात के चलते उसके माता-पिता ने उसे कुछ लड़कों के फोटो दिखाए,तो उसने किसी के लिए भी हाँ नहीं कहा .उसके मानसपटल पर केवल वही चेहरा अंकित था.

एक दिन एक महिला नव्या के लिए सौरभ का रिश्ता लेकर आई. सौरभ शहर के प्रतिष्ठित और संपन्न परिवार का युवक था. नव्या ने फोटो देखने से पहले ही मना कर दिया पर उसके माता-पिता ने लड़के और उसके परिवार वालों को घर पर बुला लिया. नव्या किसी भी लड़के से मिलना नहीं चाहती थी,किन्तु अपने माता-पिता के कहने पर जैसे-तैसे तैयार होकर ड्राइंग हॉल में आई और उस युवक को देखकर हक्की-बक्की रह गई. यह वही शख्स था जिसने मंच पर फिसलते वक़्त उसका हाथ थामा था. उसके चेहरे पर विस्मय की रेखाएँ देखकर सौरभ और नव्या के परिवारवालों को लगा कि शायद उसे सौरभ पसंद नहीं आया. वह चाय टेबल पर रखकर चुपचाप नजरें झुकाकर बैठ गई.

नव्या और सौरभ को एक-दूसरे से बातचीत करने का अवसर दिया गया. नव्या ने अपने उत्साह को छिपाते हुए, बहुत ही साधारण तरीके से बात की परंतु सौरभ ने अपने हृदयगत भावों को मुखरित कर दियाथा. दोनों ने विवाह हेतु अपनी सहमति दी. लिहाजा दोनों पक्ष विवाह हेतु तैयार हो गए. कुछ दिनों में विवाह की तिथि निश्चित कर दी गई. फिर क्या था! नव्या का मन एक अलग ही दुनिया में भ्रमण करने लगा. उसकी कल्पनाओं को पंख लग गए और वह एक खूबसूरत-सी दुनिया में विचरण करनेलगी. पिता ने धूमधाम से उसका विवाह कर उसे विदा किया और विदाई के समय उससे कहा, 'पुत्री ! ससुराल में कोई भी बात हो जाए परंतु कभी अपना धीरज मत खोना. 'यह सुन उसकी आँखों से अश्रु छलक आए और थोड़ी ही देर में सभी परिजन भी भावुक हो गए, करुणामय विदाई हुई.

पिता के वचनों को आत्मसात कर नव्या ने अपने नए जीवन में प्रवेश किया. वह बहुत प्रसन्न थी. सौरभ बहुत अच्छा लड़का था, वह उसे खुश रखने का प्रयत्न करता था. सौरभ का परिवार भी छोटा था. वह अपने माता-पिता तथा बहन खुशबू के साथ रहता था. उसका घर आधुनिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण था. उसके पिता का इलेक्ट्रॉनिक सामान का व्यवसाय था. आमदनी काफी अच्छी थी. नव्या बहुत सुंदर और संस्कारी लड़की थी. वह सुबह जल्दी उठकर नहा-धोकर घर के कार्यों में जुट जाती थी. अपनी माँ की कही हुई हर बात का पालन करती हुई सभी को समय पर चाय, नाश्ता और खाना देने के बाद ही भोजन करती थी. घर की सारी जिम्मेदारी उसने जल्द ही संभाल ली थी. उसकी वाणी की मधुरता ने सबका मन मोह लिया था. उसके ससुर और पति दोनों ही उसकी बहुत प्रशंसा करते थे. धीरे-धीरे मोहल्ले वाले और रिश्तेदार भी उसके गुणों की सराहना करने लगे. उसकी इतनी प्रशंसा सुनकर एकाएक उसकी सास और ननद खुशबू उससे ईर्ष्या करने लगी थीं.

जब भी कोई नव्या की तारीफ करता, खुशबू उसकी निंदा करने लगती. बिना बात के ही झगड़ा करती. वह जब भी घर का कोई काम करती, वे दोनों उसके काम में व्यवधान उत्पन्न करती. पड़ोसियों और रिश्तेदारों से भी नव्या की निंदा करने लगीं. उसकी गलती न होने पर भी आए दिन घर में ननद और सास की वजह से कोहराम मचने लगा था .अब तो उसके ससुर भी अपनी पत्नी और पुत्री के सुर में सुर मिलाने लगे और पुत्र को दुकान पर धमकाने भी लगे कि, 'देखो सौरभ! यदि नव्या के कहने पर घर छोड़कर गए तो अच्छा नहीं होगा. मैं तुम्हें समाज में बदनाम कर दूँगा और तुम पर यह आरोप लगेगा कि बेटे ने पत्नी के कारण माता-पिता को छोड़ दिया.'

पानी सिर के ऊपर आ गया था. रोज-रोज की नोक-झोंक से सौरभ तंग आ गयाथा. उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था, पर वह उसके लिए कुछ नहीं कर पा रहा था .वह जब भी नव्या का साथ देता या उसके पक्ष में कोई बात कहता तब घर वाले नव्या को और अधिक परेशान करते और साथ ही सौरभ को भी ताने सुनाते .सौरभ बहुत अनमना रहने लगाथा. वह ज्यादा किसी से बात नहीं करता. कुछ दिन वह अंतर्द्वंद्व में रहा. एक दिन सौरभ ने मन ही मन एक निर्णय लिया और नव्या से कहा, 'आज के बाद तुम्हें मेरे घरवालों की वजह से परेशान नहीं होना पड़ेगा. मैं जल्द ही तुम्हें इन तकलीफों से मुक्त कर दूँगा.'

नव्या को सौरभ की कही अंतिम पंक्ति एक गुत्थी की तरह लगी, जिसे वह सुलझा नहीं पा रही थी. उसने सोचा, शायद सौरभ ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसने घरवालों से अलग रहना तय किया है.

सौरभ ने क्या निर्णय लिया था ! नव्या जानना चाहती थी परंतु सौरभ ने इसकी भनक तक किसी को नहीं लगने दी. अगले दिन सौरभ सुबह शो-रूम पर जाने के लिए घर से निकला, परंतु वहाँ न जाकर रेलवे स्टेशन चला गया. रेलगाड़ी आने ही वाली थी और वह पटरियों पर चला गया. वह अपने परिवार वालों को बहुत चाहता था पर उनके व्यवहार में नव्या के प्रति द्वेष और कटुता देखकर उसका मन भीतर से रिसने लगा था. एक टीस भीतर-ही-भीतर उथल-पुथल मचा रही थी जिसकी परिणति आत्महत्या के रूप में हुई लेकिन हत्या और आत्महत्या के बीच का द्वंद्व कुछ क्षण पटरियों पर बिखरा रहा.

घर में अनबन के कारण अनहोनी घटित हो गई जिसके बारे में घर वालों ने कभी सोचा नहीं था. सौरभ के माता-पिता को लगा था कि नव्या को परेशान करेंगे तो सौरभ उसे छोड़ देगा परंतु विधाता ने अलग ही खेल रचा था. उसकी मृत्यु की खबर जब घरवालों तक पहुँची तो सभी ने नव्या पर आरोप लगाने शुरू किए, नव्या का रो-रोकर बुरा हाल था. सौरभ के माता-पिता अफसोस व्यक्त करने की बजाय अपनी बहू पर दोषारोपण कर रहे थे ताकि उनके दोष उजागर ना हो पाएँ. वे नव्या का मुँह बंद करना चाहते थे जिससे वह पुलिस के सामने कुछ ना कहे. सौरभ के माता-पिता पुलिस के सामने गिड़गिड़ाने लगे और कहने लगे कि वे नव्या को गिरफ्तार कर लें क्योंकि उसी की वजह से सौरभ ने इतना बड़ा फैसला किया.

पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर नव्या रोते-रोते बेसुध हो गई. पुलिस ने सौरभ के माता-पिता, बहन एवं पड़ोसियों से पूछताछ की और उनके बयान लिखे, जब नव्या होश में आई तो वह फिर बहुत रोने लगी. अगली सुबह वह फिर थाने जाकर अपना बयान देकर आई जिसमें उसने सौरभ के माता-पिता की सारी करतूत बयान की. उन दोनों को हिरासत में ले लिया गया और उन पर न्यायालय में मुकदमा चला. काफी समय तक कार्यवाही चलती रही. इस घटना के कुछ दिनों बाद नव्या अपने पीहर आ गई. कुछ महीनों तक गुमसुम रही, कहीं आती-जाती नहीं थी. उसके माता-पिता चिंतित रहने लगे थे.

एक दिन उन्होंने नव्या से कहा - 'नव्या तुम अपनी आगे की पढ़ाई पूरी कर लो.'

उसने सौरभ की यादों को संजोए अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखी. स्नातकोत्तरकी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद फिर से नव्या के विवाह के प्रस्ताव आने लगे. अब वह विवाह नहीं करना चाहती थी. कभी-कभी सौरभ की यादों में बहुत ज्यादा खोई हुई व्यथित लगती. माता-पिता के बहुत समझाने- मनाने के बाद उसने विवाह के लिए स्वीकृति दी, पर इस विवाह के समय उसके चेहरे पर वह मुस्कान नहीं थी जो पहले विवाह के समय थी. उसका विवाह झीलों की नगरी में हुआ. वहाँ के अद्भुत सौंदर्य ने उसे अभिभूत कर दिया. नव्या का दूसरा पति आदित्य भी सरल स्वभाव का था और उसके ससुराल वाले भी सभ्य और अच्छे विचारों के थे. वह धीरे-धीरे अपने दुखों, तकलीफों से उबरने लगी थी पर सौरभ की यादें उसे बरबस रुला देती थीं. दूसरी ओर उसे जीवन पुकार रहा था, जिंदगी जीने के लिए. वह एक प्रतिष्ठित विद्यालय में अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ देने लगी. विद्यार्थियों को पढ़ाना और विद्यालय के अकादमिक कार्यों में सहयोग करना, यह सब उसे अच्छा लगने लगा था.

एक दिन नव्या और आदित्य फतेहसागर झील के किनारे घूम रहे थे. वहाँ से प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य को निहारते हुए नव्या बहुत प्रसन्न लग रही थी. पल-पल परिवर्तित प्रकृति-रूपसी ने उसका मन मोह लिया. खुशी और गम दोनों भाव उसकी आँखों में तैर रहे थे और कुछ ही क्षणों में उसकी आँखें नम हो गईं.

क्लास by बड़े भाई

यह सब मत याद रखिए

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, किसी को कहते सुना है ? मुझे एक एक बात याद रहती है भाई, किसने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है एक एक चेहरा याद है.. सुना है न ? सूना ही होगा. छोटे भाई, ऐसे लोगों को आप कभी खुश नहीं देख सकते..वो पूरा जीवन बदला लेने के फिराक में ही बिता देते हैं। अब आप कहेंगे कि तो क्या भुलक्कड़ हो जाना चाहिए.. नही भुलक्कड़ होने को नही कह रहा बल्कि किस बात को किनारे कर देना चाहिए, जाने देना चाहिए, यह समझने कि बात है. छोटे भाई, यह दुनिया हजार कहानियों से भरी है। कहीं अच्छाइयाँ हैं तो कहीं कुछ बुराइयाँ भी है। इस दुनिया में आपको सबकुछ अच्छा मिले, सबकुछ आपके हिसाब से रहे यह थोड़ा मुश्किल है। असंभव कह सकते हैं। अचा बताइए, आपको ठंड पसंद है तो क्या अधिक ठंड आपको चुभती नहीं है। बारिश आपको पसंद है लेकिन जब बारिश लगातार होती ही रहे तब? शायद नहीं..लेकिन आप बर्दाश्त करते हैं न.. क्या शिकायती होकर आप ठंडी हवाएं रोक लेंगे? क्या बारिश की बूंदें आपकी शिकायत सुन सकेंगी ? नहीं तो फिर शिकायती क्यों होना.. इस तरह छोटे भाई ज़िंदगी में कहीं अच्छा तो कहीं बुरा मिलता ही रहेगा। अगर याद रखना है तो सुन्दर और ऊंचे लक्ष्य की ओर ले जाने वाली बातें याद रखें. किसी से बदला लेंगे, देख लेंगे.. इन सबसे अपने आपको दूर रखिये. छोटी सी ज़िंदगी को छोटी छोटी बातें नज़रंदाज़ करके, इसे बढ़िया शानदार बनाए रखिए। कभी अपमान किया किसी ने, किसी ने आपकी कीमत नहीं समझी, परिवार ने आपके समर्पण को नहीं देखा, किसी ने आपके प्रेम को नहीं समझा.. अरे जाने दीजिए. इनको बड़ा बनाएंगे तो यह आपके पक्ष में तो हो नही जायेंगे बल्कि आपके पूरे जीवन पर बुरी छाया कि तरह छायी रहेंगी और आप एक शानदार जीवन इनके भीतर व्यर्थ करेंगे. छोटे भाई इसके लिए करना कुछ नही है .. बस आपका एक बढिया सा लक्ष्य हो.. बस उसकेल इए जो जारूरी हो उसको याद रखिये.. बाकि सब भूल जाइए.. क्योंकि ऐसे चेहरे याद रखने लगेंगे और सबसे बदला लेने कि रणनीति बनाने लगेंगे तो इस फेर में लक्ष्य से भटकेंगे या देरी से पहुंचेंगे और कुछ नही होगा. धन्यवाद

आयोजन

जीवन के कठिनतम में जन्मती है कविता

शिल्पी जैन

कविता में हमारे आमफहम जीवन और उसके आस-पास के परिवेश से प्रभावित होकर जो लिखा जाता है वही याद रह जाता है. कविता में शब्द अपनी बैठक खुद तय करते हैं. कविता का काम पाठक को सोचने पर मजबूर करना है. एक कवि के लिए सबसे जरूरी बात यह हैं कि वह अपनी कविताओं का निर्मम आलोचक बनें.

कविता विधा पर ये महत्त्वपूर्ण बातें म.प्र.हिंदी साहित्य सम्मेलन की देवास इकाई और लिटरेचर क्लब की दो दिवसीय कार्यशाला 'सुनो, क्या कहती कविता' में उभरकर सामने आईं. शुरुआत में कथाकार मनीष वैद्य ने इसकी रूपरेखा पर विस्तार से प्रकाश डाला.

पहले सत्र 'बीज से बिंब तक' में प्रतिष्ठित कवि संजीव कौशल (नई दिल्ली) ने बेहद आसान तरीके से बहुत सादगी के साथ कविता की बारीकियों को समझाया. उन्होंने कहा कि हमारी भाषा इतनी सरल हो कि किशोर उम्र के बच्चे भी उसे समझ सकें, कविता सदैव से प्रेम, प्रकृति और प्रतिरोध के मायनों में लिखी जाती रही है पर कवि का कहन उसे पृथक और विशिष्ट बनाता है. कविता लिखने के लिए हमें गलत के प्रति सजग होना ज़रूरी है, कविता अपनी तासीर में गलत के ख़िलाफ़ खड़ी होती है. जब हमारे संघर्ष, पीड़ा, हमारा द्वन्द्व हमारा होकर भी सब का हो जाए, आम पाठक के मन की परतों के भीतर तक जाकर उसे जगा सके तब होती है बड़े फलक की कविता. इस सत्र का मॉडरेशन युवा कवि अमेय कान्त ने उम्दा तरीके से किया.

दूसरे सत्र 'कवितापन की तलाश' में वरिष्ठ कवि राजेश सक्सेना (उज्जैन) ने बताया कवितापन के लिए तीन चीज़ें जरूरी है प्रेम ,प्रकृति और प्रतिरोध. बांग्ला की चर्चित युवा कवि झिलम त्रिबेदी (कोलकाता)ने बताया कि कविता परत-दर-परत खुलती है जरूरी नही पहली पंक्ति ही आपको सरप्राइज़ करें. कविता की लय,छंद और आंतरिक लय पर भी गंभीरता से बात हुई .इस सत्र का मॉडरेशन यशोधरा भटनागर ने किया.

तीसरे सत्र में प्रतिभागियों ने कविता पाठ किया जिसका संचालन तनिष्का ने किया. पहली बार बांग्ला में झिलम से कविताएं सुनी जो एक यादगार अनुभव बन गया. इनका हिन्दी में अनुवाद राजेश विश्नोई ने किया. अलग-अलग तेवर और भाव भूमि की सुगढ़ कविताएँ सुनना और उस सुनने से कविता को समझने पर ज़ोर दिया गया. अतिथि वक्ताओं ने भी बेहतरीन कविताएँ पढ़ीं.

अगले दिन के पहले सत्र 'कविता; लोकल से ग्लोबल तक' में बातचीत हुई कि कैसे कविता बड़े फलक की होती हैं इसे निरंजन श्रोत्रिय (भोपाल) ने आसान भाषा में समझाया. इस सत्र का मॉडरेशन मनीष शर्मा जी ने किया. पाँचवे सत्र 'कविता की ज़बान' में प्रतापराव कदम (खंडवा) ने कविता की भाषा , शिल्प, शब्दों के चयन और संवेदना पर खुलकर बातचीत की .इस सत्र का मॉडरेशन रश्मि शर्मा ने किया.

सभी सत्रों में प्रतिभागियों के सवालों के जवाब अतिथि वक्ताओं ने दिए जिससे कविता की समझ को और विस्तार मिला. प्रतिभागियों ने जाना कि व्यक्तिगत प्रतिरोध, पीड़ा और द्वन्द्व जब साझी पीड़ा ,द्वन्द्व बन जाते है तो वे कविता हो जाते है और प्रभावी बिंब इन्हें बड़े फलक की कविता बनाते हैं.

शाम के मुख्य समापन आयोजन में कविता की स्थानिकता , नए कवि के सामने आने वाली चुनौतियों से कैसे उबरा जाए इस पर अच्छी बात हुई. अध्यक्षता डॉ कोमल जैन ने की. स्वागत भाषण कृपाली राणा ने, इकाई परिचय शर्मिला ठाकुर और अतिथि परिचय शिरीन भावसार ने दिया. इस सत्र को सुनने के लिए सौ से अधिक सुधी श्रोताओं से हॉल खचाखच भरा रहा. इस अवसर पर सुमन कुमावत के ताज़ा कविता संग्रह 'मेरी हँसी की भाषा' तथा कुसुम वागडे के कविता संग्रह 'आवाज़ें छूकर पार नही होती' का विमोचन हुआ. इनपर आमंत्रित अतिथियों ने खुलकर बातचीत की. इस सत्र का संचालन मनीष वैद्य ने किया. आभार प्रदर्शन मंजू जैन जी ने किया. उम्मीद है, इन दो दिनों ने कविता को समझने, गढ़ने उसे मुकम्मल बनाने के जो बीज प्रतिभागियों के मन की माटी पर रोपें वे जल्द ही पल्लवित होंगे.

कविता

मैं अकेला यूं ही गाता रहा

राकेशधर द्विवेदी

मैं अकेला यूं ही गाता रहा
कुछ गीत-ग़ज़ल गुनगुनाता रहा,
मैं अकेला टहलता रहा छत पर
चांद तारे और घटाएं थीं नज़र पर
वे श्रोता थे मेरे सुनसान डगर पर,
जिन्हें अपनी कहानी
मैं सुनाता रहा.

मैं विरह के छंदों को गा रहा था
जिसे सुन कर नभ में खड़ा कोई
जोर से ताली बजा रहा था....
दूर नभ में खड़ी थी मेरी प्रेयसी भी
जिसने सच्ची कहानी
मेरी पूरी सुनी,
वो चांद-तारों के
संग-संग गाती थी
जैसे काले मेघों के बीच
मुस्कुराती थी.

कहानी सुनाते सुनाते
फिर सवेरा हुआ,
मैंने धरती को पाया
जल से भीगा हुआ.
पूछा उससे मैंने ये सब कैसे हुआ,
फूल क्यों मुरझाए,
क्यों अंबर नम हुआ.

उसके होंठ थरथराए
और फिर बुदबुदाए,
रात भर तुम कहानी सुनाते रहे
ये चांद-तारे पीड़ा में
अश्रु लुटाते रहे.
जो पढ़ी नहीं गई कविता
वो बुनती रही,
मैं उनकी पीड़ा कैनवास पर
लिखती रही.

कविताएं

40 के बाद वाला वैलेंटाइन..

सुचिता सकुनिया

अब रोज़-रोज़
स्पेशल डेज नहीं मनते,
पर हर दिन में एक
अपनापन होता है,
नई उम्मीद, नई उमंग के साथ
ज़िंदगी को जीने का
सलीका होता है.

कम होते बाल,
और चाँदी सी होती लटें—
वक़्त की निशानी तो हैं,
पर इन सबके बीच भी
एक मुस्कान का ठहर जाना...
शायद यही प्यार है.

शायद प्यार से ज़्यादा
फ़िक्र वाला होता है,
जहाँ कुछ कहने से ज़्यादा
सुन लेने का मन होता है...
जहाँ दो पल साथ बैठ जाना ही
पूरे दिन का सुकून बन जाता है.

अब नहीं होती ख्वाहिश
गुलाबों की,
एक हल्की-सी मुस्कान ही
काफ़ी है...
जो बिना कुछ कहे ये जता दे—
कि साथ आज भी
उतना ही सच्चा है.

अब इज़हार थोड़ा
बदल जाता है..
चुपचाप इंतज़ार में,
बिना कहे थकान समझ जाने में,
छोटी-छोटी बातों में
ख्याल रख लेने में—
यही तो अब प्यार नज़र आता है.
शायद...
कुछ ऐसा ही होता है
40 के बाद वाला वैलेंटाइन—
जहाँ प्यार कहा कम जाता है,
पर हर रोज़, हर पल
और गहराई से महसूस
किया जाता है.

महाशिवरात्रि

प्रोफेसर (डॉ.) प्रज्ञा मिश्रा
म. गां .चि. ग्रा. विश्वविद्यालय
चित्रकूट (म.प्र.)

शिवरात्रि के पावन दिन पर,
हर हर हर हर्षाया.
गौरी प्यारी गोरी तुम्हारी,
गौरव गुन गुन गाया.
शिव डमरू के डम डम डम,
से ऊँकार मुस्काया.
पार्वती शिव परिणय का,
रात्रि महोत्सव आया.
तुम सबके हो अन्तर्यामी,
तुम सबसे हो ज्ञानी ध्यानी.
पार्वती तुम्हरी महारानी,
पर्वत की है हिम हिय रानी.
सबसे प्यारी छबि उनकी है,
सबसे न्यारी कृति उनकी है.
तुम दोनों श्रमसाध्य सभी के,
तुम दोनों संभाष सभी के.
तुम रिश्तों में जान फूंकते,
तुम से सब हैं राह पूछते.
तुम सबके मस्तक पर रहते,
हिय में बसते जिय को कसते.
राम नाम तुमको अति प्यारा,
दीन दु:खी सबसे है प्यारा.
शिव रात्रि के पावन दिन,
पर हर हर हर हर्षाया.
गौरी प्यारी गोरी तुम्हारी,
गौरव गुन गुन गाया.
गौरी को तुम मान हो देते,
स्वामिनि का सम्मान हो देते.
गौरी शक्ति तुम्हारी है,
भोली भक्ति हमारी है.
सारी अच्छाई तुममें है,
कोरी सच्चाई तुममें है.
कष्टों को तुम दूर भगाते,
मेरा मन मजबूत बनाते.
प्रेम प्रीति सबको सिखलाते,
नारी जन आधार बताते.
नारी को सम्मान दिलाते,
यही पाठ सबको समझाते.
शिवरात्रि के पावन दिन,
पर हर हर हर हर्षाया.
गौरी प्यारी गोरी तुम्हारी,
गौरव गुन गुन गाया.
शक्ति बिन शिव रिक्त रहेगा,
भक्ति से न सिक्त रहेगा..
अत: शक्ति को साथ रखो,
घर-घर में सौहार्द्र रखो
सत्कर्मों का दास बनो,
दुर्जन का संत्रास बनो.
सत्कर्मों के कर्मो से,
भूमण्डल पर राज करो.
पति-पत्नी में प्रेम रहे,
अधिकार रहे, सम्मान रहे.
यही शिवरात्रि कहती है,
यही भक्ति भव तरती है.
शिव रात्रि के पावन दिन,
पर हर हर हर हर्षाया.
गौरी प्यारी गोरी तुम्हारी,
गौरव गुन गन गाया.

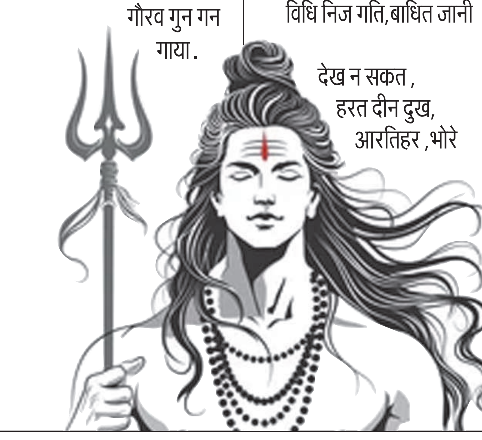

हे महाकाल समर्थ भगवान

अजय मिश्रा

होत प्रसन्न ,पात अरु अक्षत
परम उदार सदाशिव दानी ,

भाग्य बदल दे,लेख विधाता ,
विधि निज गति,बाधित जानी

देख न सकत ,
हरत दीन दुख,
आरतिहर ,भोरे

भगवान औढरदानी,
होत द्रवित ,
हरत विपति महिमा महान

करूणा मय ,
उदार शिवशंकर ,
हे काशीपति, हे अविनाशी

दीजे भगति ,
रामचरण रति ,
हे देवाधिदेव ,
त्रिपुरासुर संहारी ,

राम भगति,
जन-मन भारत ,
उपजै ,होय सकल भ्रम हानी ,

भ्रमितभारतजन ,
सुरति करो ,
हे आशुतोष , हे दिव्य ज्ञानी ,

देशद्रोही, मलेच्छमति से ,
सुरक्षा साधू , संत जन आन ,

हो त्रास समन,भारतभूमि,
हे महाकाल , समर्थ भगवान

मेरा कोना

नीना अंद्रोता

पिता के घर में
मेरा बस एक कोना है
ना पूरा कमरा,
ना कोई ताला.
बस एक कोना,
जहाँ मैं अपनी चीज़ें
सहेज कर रख सकती
हूँ.

उस कोने में
एक पुरानी सी अलमारी
है.
दरवाज़ा खोलो तो
कपड़े ठीक से नहीं मिलते
सब कुछ जैसे
जल्दी-जल्दी ठूँस दिया गया हो.

घर के कपड़े,
त्योहारों के कपड़े,
और कुछ ऐसे भी
जो अब पहने नहीं जाते
पर फेंके भी नहीं जाते.

उसी अलमारी के ऊपर
माँ का संसार रखा है.
एक छोटा सा डिब्बा,
दो - तीन कंघियां,
कुछ पिनें
और वो सुर्खी
जो बरसों से खत्म नहीं होती.
उसी के साथ दो तीन नई होती हैं
मैं जानती हूँ
माँ को ब्रांड का शौक़ नहीं.
ना उसने कभी
किसी दुकान का नाम लिया,
ना कीमत पूछी.
कुछ कीमती लगता है
तो सहेजकर रख लेती है

मेरे हाथ अपने आप बढ़ जाते हैं.
उसी डिब्बे की ओर
कभी एक सुर्खी उठा लेती हूँ,
कभी एक बिंदी.

अजीब है ना...
मैं खुद अपने लिए
साज-श्रृंगार खरीदने में
हमेशा नकारा रही हूँ.
फिर भी...
माँ के उस छोटे से डिब्बे में

मुझे कोई लालच खींच लेता है.
शायद....
वो लालच नहीं है,
बस माँ को
अपने चेहरे पर
थोड़ी देर के लिए
उतार लेने की चाह है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी